श्री जिनेन्द्र पंचकल्याणक-पूजा

मोक्षकल्याणक

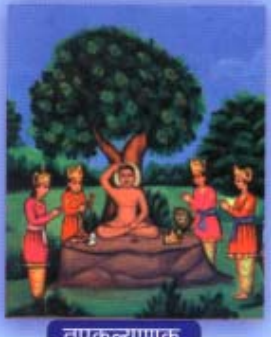

तपकल्याणक

केवलज्ञानकल्याणक

गर्भकल्याणक

जन्मकल्याणक

प्रकाशक :
श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट
सोनगढ-३६४२५०

भगवानश्री कुन्दकुन्द-कहानजैनशास्त्रमाला, पुष्प–१४९

ॐ

णमो जिणाणं ।

कवि भैरोंदासजी अग्रवाल द्वारा विरचित

श्री जिनेन्द्र पंचकल्याणक-पूजा

प्रकाशक

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट,

सोनगढ (सौराष्ट्र) PIN : 364250

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

प्रथमावृत्ति	वि.सं. २०३९	प्रत : ११००
द्वितीयावृत्ति	वि.सं. २०६५	प्रत : २०००

श्री जिनेन्द्र पंचकल्याणक पूजा (हिन्दी)के
*** स्थायी प्रकाशन पुरस्कर्ता ***
सुरेशभाई चीमनलाल संघवी
सरलाबेन सुरेशभाई संघवी मुंबई-सोनढ

यह शास्त्रका लागत मूल्य रु. 11=70 है। अनेक मुमुक्षुओंकी आर्थिक सहायतासे इस आवृत्तिकी किंमत रु. 10=00 रखी गई हैं।

मूल्य : 10=00

: मुद्रक :
स्मृति ऑफसेट
सोनगढ़–364250
Ph : (02846) 244081

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

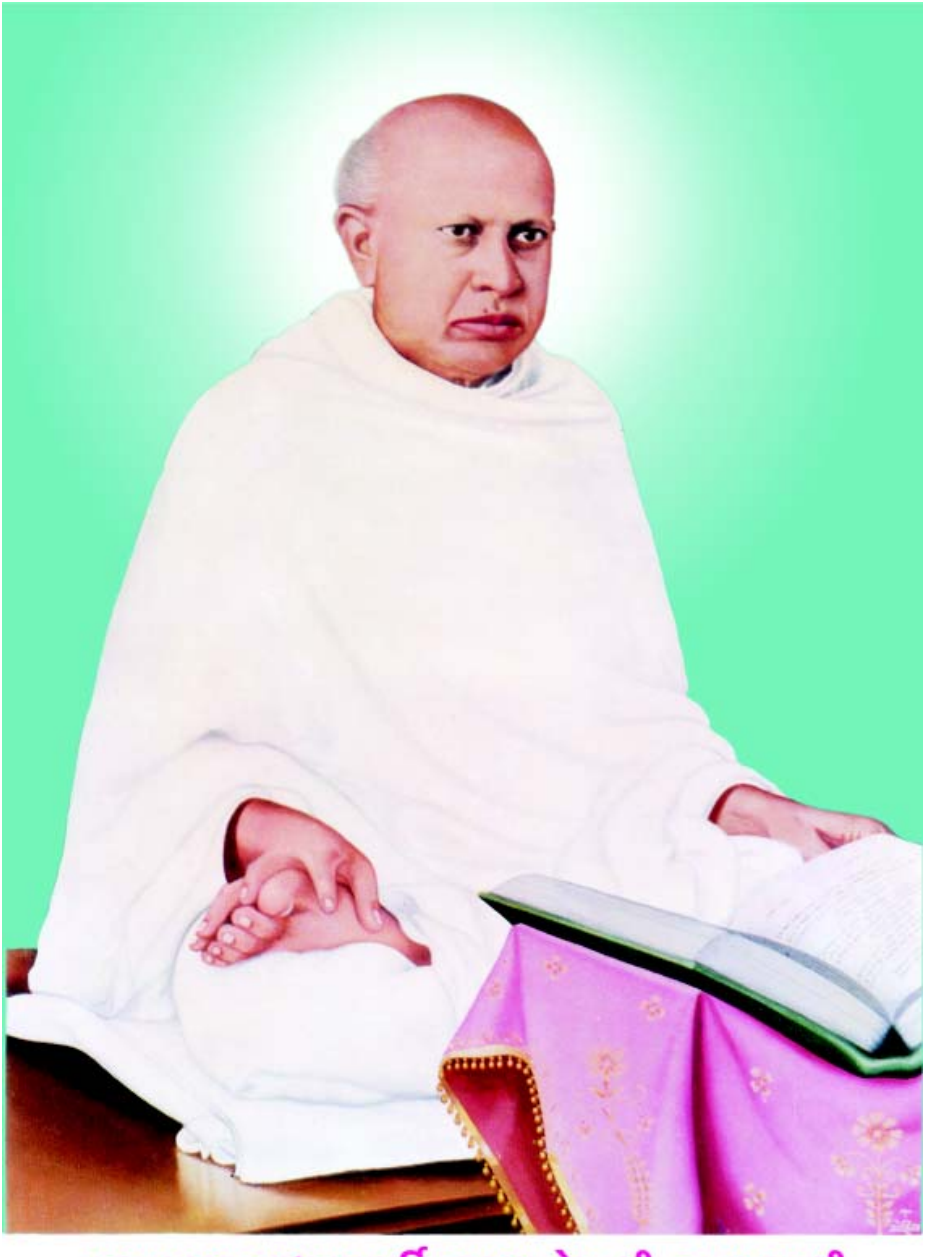

પરમ પૂજ્ય અધ્યાત્મમૂર્તિ સદ્‌ગુરુદેવ શ્રી કાનજીસ્વામી

प्रकाशकीय निवेदन

वीतराग दिगम्बर जैनधर्मके सातिशय प्रभावक अध्यात्ममूर्ति स्वात्मानुभवी सत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीने अध्यात्मतत्त्वके रहस्योद्घाटनके साथ साथ वीतराग देव-शास्त्र-गुरुकी सच्ची पहिचान देकर मुमुक्षु समाजके ऊपर असीम उपकार किया है। उनके सत्प्रतापसे मुमुक्षु समाजमें जिनेन्द्र-पूजा-भक्तिकी प्रवृत्ति नियमित चल रही है। पूज्य गुरुदेव स्वयं भी सोनगढ़में नियमितरूपसे जिनेन्द्रभक्तिमें उपस्थित रहते थे। उनके ही पुण्यप्रतापसे सौराष्ट्र-गुजरात एवं अन्यत्र अध्यात्म प्रचारके साथ साथ जिनमंदिर-निर्माण एवं पंचकल्याणक और वेदीप्रतिष्ठाका युग चला।

सोनगढमें परम पूज्य श्री महावीर भगवानके निर्वाणकल्याणक महोत्सव (दीपावली-उत्सव)के समय कार्तिक वदी ११ से ३० तक पाँच दिन पंचकल्याणक-भक्ति वर्षोंसे की जाती है। उसके संदर्भमें प्रशममूर्ति धन्यावतार भगवती पूज्य बहिनश्रीको यह पवित्र भावना स्फुरित हुई कि—उक्त दिनोंमें श्री पंचकल्याणक-पूजाका भी कार्यक्रम भी रखा जाय । पूज्य बहिनश्रीकी पुनित भावनाको साकार बनानेके लिए यह संस्करण मुद्रित कराया गया है।

स्व. कवि भैरोंदासजी अग्रवाल रचित 'श्री जिनेन्द्र पंचकल्याणक पूजन' श्री चन्द्रसागर जैन पुस्तकालय–अजमेरसे प्रकाशित हुआ है। उसके आधारसे यह नया संस्करण मुद्रित किया गया है। इस पुस्तककी प्रथम आवृत्ति समाप्त हो जानेसे उसका द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है मुमुक्षु समाज इस प्रकाशनसे लाभान्वित होगा।

पूज्य गरुदेवश्रीका
१२०वाँ जन्मोत्सव
वैशाख सुद २
वि. सं. २०६५

साहित्यप्रकाशनसमिति
श्री दि0 जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट,
सोनगढ (सौराष्ट्र)

अनुक्रमणिका

1.	मंगलाचरण	1
2.	समुच्चय पूजा	3
3.	गर्भकल्याणक पूजा	6
4.	जन्मकल्याणक पूजा	13
5.	तपकल्याणक पूजा	25
6.	ज्ञानकल्याणक पूजा	34
7.	मोक्षकल्याणक पूजा	45
8.	समुच्चय अर्घ	53
9.	आरती	54

ॐ

* श्री जिनाय नमः *

पंचकल्याणक-पूजा

मंगलाचरण

(दोहा)

वंदो पांचो परम पद, सुबुधि सिद्धि दातार।
विघनहरण मंगलकरण, सुख समाज करतार॥१॥

(सवैया)

मंगलको अर्थ पापनाश, पुण्यको उपावे सोई,
पंचपद वृषभादि नाम शुभ गायेते।
थापन्मति बिंब तासु दर्व चिन्मूरत फुनि,
विद्यमान विदेह खेत कल्याणक भायेते॥
समोशृत जिनागार कृत्रिम अकृत्रिम जो,
काल समै कल्याणक पर्व तिथि पायेते।
भावभक्ति चिंतवन तत्त्व वीतराग चरण,
दान पूजा सामायिक व्रत तप लायेते॥२॥

(दोहा)

यातैं श्री वृषभादिकी, स्तवन सु पूजन ध्यान।
सर्वोत्तम सब विघनमें, सेवो भवि सुखखान॥३॥

(पद्धडी छंद)

जय जय जय श्री ब्रह्मा महेश, शंकर शंभू जगदीश शेष।
जय बुद्धि विदांवर विष्णु ईश, जय विष्णु चिदोत्तम गण ऋषीश॥४॥

जय हरि जितांतक धर्मराज, जय खेचर दुर्जय अतुल बाज।
जय सुज्ञ धनंजय स्वयं बुद्ध, जय विभु कलाधर शशि निरुद्ध॥५॥

जय मिथ्या तिमिर प्रचंड सूर, जय कर्मदवानल मेघ भूर।
जय निरारेक आनंदसिंधु, गत रागरुष अलौकिक बंधु।।६।।

जय सुनय केवली परम इष्ट, जग जेष्ट पितामह महा शिष्ट।
जय स्वयं जोति जगपति वरिष्ठ, सर्वज्ञ स्वयंभू अति गरिष्ठ।।७।।

जय दया-ध्वजी निकलंक देव, वरधर्मो व्यापी सर्वमेव।
जय अनेकांत-आत्मक स्वरूप, जय वेद निरूपन चित अनूप।।८।।

जय मृत्युंजय शिवरमाकंत, गणपति गणनायक परम संत।
जय गुणरत्नाकर माधवेस, जय सुगत सदोदय विश्वभेस।।९।।

जय वृषाधीस श्रीमान पूज्य, वागीस अमर अज सुनिध भूज्य।
जय परम निरंजन निकल नित्य, अविरुद्ध वचनामृत सकल स्वस्त्य।१०।।

जय अव्यय अनि ईश्वर अलक्ष, जय एकानेक अधार स्वक्ष।
जय जगति शिरोमणि चिद्विलास, कृतकृत्य निरोपम अखिलरास।।११।।

जय निर-आमय अनमित प्रकास, जय लोकालोक विलोक ग्रास।
जय केवल मूरत रहित संग, जय घाति अघाति घात चंग।।१२।।

जय पर्म शर्मनिधि लोक शीस, जय मर्म भर्म हत विश्व ईस।
जय सब विद्येश्वर लंब हाथ, जय तीर्थंकर जिनप्रभु नाथ।।१३।।

जय सुधी सनातन धर्मचक्री, जय चतुरानन चतु वेद वक्त्री।
जय भुवनेश्वर अनवस्थ भूप, साकार निराकार स्वरूप।।१४।।

जय परमानंद जिनेन्द चन्द, जय प्रवचन आप्त सु रहित फंद।
जय ऋद्धि समृद्धि विवृद्धिकार, जय वस्तु यथारथ सिद्धिकार।।१५।।

इत्यादि अनंत गुणात्मसार, सुरगुरु आदिक नहि लहत पार।
मैं महा मंदमति कहूँ काह, जय जय जय जय श्री जिन अगाह।।१६।।

(दोहा)

इह गुणमाला कंठ धरी, पढै राग जुत सोय।
ताकै सुर-नर-नागपद, सुलभ अंत शिव होय।।१७।।

समुच्चय-पूजा

(दोहा)

श्री वृषभादि जिनेशवर, चरम वीर चौवीस।
आय तिष्ठ मम सन्निहितं, कृपासिंधु जगदीस॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादि-चतुर्विंशति-जिनाः! अत्रावतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वानम्। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः इति स्थापनम्। अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् इति सन्निधिकरणम्।

मुनिमन सम उज्ज्वल नीर, शीत सुगंध धरै;
त्रयधार चरण ढिग कीर, त्रिविधाताप हरै।
श्री वृषभ आदि चौवीस, आनंद कंद सही;
ध्यावत सुर-नर-खगईश, पावत मोक्षमही॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादि-वीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन कर्पूर मिलाय, केसर संग घसे;
तव चरणन देत चढाय, भवतन-दाह नसे। श्री वृषभ०

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादि-वीरान्तेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल मुक्ता उनहार, वर्जितखंड खरे;
ढिग पुंज धरे भवपार, अक्षय पद सु वरे। श्री वृषभ०

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादि-वीरान्तेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मन नयन घ्राण सुखकार, कमलादिक प्यारे;
ल्यावत ढिग काम पुकार, भाग्यो डरमारे। श्री वृषभ०

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादि-वीरान्तेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षटरस पूरित नैवेद्य, सद्य सुगंध लसै;
तुम चरण चहोडें खेद, इच्छा भूख नसै।
श्री वृषभ आदि चौवीस, आनंद कंद सही;
ध्यावत सुर-नर-खगईश, पावत मोक्षमही॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादि-वीरान्तेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तम नासक दीप प्रकाश, कर्पूरादि लये;
ढिग धारत ज्ञान उजास, मिथ्या तिमिर जये। श्री वृषभ०

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादि-वीरान्तेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागर तगर उसीर, चंदन धूप किये;
खेये चरनन ढिग पीर, कर्म सबै नसिये। श्री वृषभ०

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादि-वीरान्तेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल पक्व मधुर सु-रसाल, दाड़िम मोच सही;
ढिग धारत भाल विशाल, द्यो मुझ शिव अब ही। श्री वृषभ०

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादि-वीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह मंगल अर्थ निमित्त, मंगल द्रव्य लियो;
आठौं से हो भयभीत, यातैं सेव कियो। श्री वृषभ०

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादि-वीरान्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

गर्भादिक मंगल किए, इन्द्रादिक सब आय।
लोकालोक विलोकिकै, सिद्ध निरंजन थाय॥१॥

(छंद तामरस)

जय श्री वृषभनाथ वृष करता, जय श्री अजित अजित मद हरता।
जय संभव भव कारण नासन, जय अभिनंदन अभिमत शासन।।२।।

जय श्री सुमति सुमत मत दाता, जय पद्माभ जगत विख्याता।
जय सुपार्श्व भव फांस विदारी, जय चंद्रप्रभ शशि दुति हारी।।३।।

जय श्री सुविधि अविध सत भंजी, जय शीतल वच जन मन रंजी।
जय श्रेयांस श्रेय दातारं, जय वासुपूज्य विद्रुम दुतिसारं।।४।।

जय विमल विमल गुण जग विस्तारं, जय अनंत गुण अतुल अपारं।
जय धर्मनाथ जिन धर्म प्रकाश्यो, जय शांति शांति शिव मार्ग विकाश्यो ।।५।।

कुंथुं कुंथुं आदिक प्रतिपालक, अर अरिवसु कर्म ध्यान प्रजालक।
मल्लि महामल काम निवारक, मुनिसुव्रत व्रत दुर्गति तारक।।६।।

जय श्री नमिजिन नमत सुरासुर, नेमनाथ रथ धर्म चक्र धुर।
जय श्री पार्श्व सार्श्व गुण धारी, जय श्री वर्द्धमान अविकारी।।७।।

(धत्ता)

चौवीस जिनंदा त्रिभुवन चंदा, आनंद कंदा भवफंदा।
जय पाप निकंदा हे गुणवृंदा, करहु अफंदा मम वृंदा।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादि-वीरान्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भकल्याणक-पूजा

(सवैया)

पूरव जन्म भावना षोडस भाइ जु तीर्थ प्रकृति दातार,
फुनि इन्द्रादिक पद सुख लहि चय आये जम्बुद्वीप मझार।
दक्षिण भरत क्षेत्र आरजमैं गर्भ मात के नगर सुभाय,
वृषभादि श्री वीर चरम जिन सो प्रभु तिष्ठो अत्र सु आय।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्ताश्चतुर्विंशति-जिनेंद्राः ! अत्रावतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वानम्। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः इति स्थापनम्। अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(छंद वरवा)

क्षीरोदधि सम प्राशुक उत्तम नीर,
रतन कटोरी धार देत हरपीर।
हो भवि पूजो ध्यावो भावसों,
श्री जिनपत चौवीसको, भवि पूजो ध्यावो भावसों।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व०

बावन चंदन कदली नंदन ल्याय,
घसि जल निरमल चरणन देत चढाय।
हो भवि पूजो ध्यावो भावसों,
श्री जिनपत चौवीसको, भवि पूजो ध्यावो भावसों।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व०

बासमती सुखदास अखंडित ल्याय,
धारत पुंज अखैनिधि आतम थाय।
हो भवि पूजो ध्यावो भावसों,
श्री जिनपत चौवीसको, भवि पूजो ध्यावो भावसों।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व०

कमल केतकी बेल चमेली ल्याय,
चरणन आगे धारत काम नसाय।
हो भवि पूजो ध्यावो भावसों,
श्री जिनपत चौवीसको, भवि पूजो ध्यावो भावसों।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व०

घेवर बावर खाजे तुरत बनाय,
धारत ही ढिग क्षुधा वेदनी जाय।
हो भवि पूजो ध्यावो भावसों,
श्री जिनपत चौवीसको, भवि पूजो ध्यावो भावसों।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०

जगमग जगमग दीप होत परकाश,
धारत चरणन आगे ज्ञान विकाश।
हो भवि पूजो ध्यावो भावसों,
श्री जिनपत चौवीसको, भवि पूजो ध्यावो भावसों।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व०

अगर तगर कृष्णागर आदिक,
द्रव्य सुगंध मिलाय।
श्री जिनवरके चरणन आगे,
खेवत करम नशाय, भवि पूजो ध्यावो भावसों।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति०

लोंग सुपारी श्रीफल आदि मंगाय,
पूजत श्री जिन मनवांछित फल पाय।
हो भवि पूजो ध्यावो भावसों,
श्री जिनपत चौवीसको, भवि पूजो ध्यावो भावसों।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति०

जल फल प्रासुक मंगल वसु द्रव लाय,
अर्घ उतारत जय जय जय जिनराय।
हो भवि पूजो ध्यावो भावसों,
श्री जिनपत चौवीसको, भवि पूजो ध्यावो भावसों।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व०

प्रत्येक-अर्घ

(चौपाई)

सरवारथ सिधितैं अहमिंद, मरुदेवी उर नाभि नरिंद।
नगर अजोध्या कृष्ण सुदोज, मास अषाढ वृषभ जिन कोज।।

ॐ ह्रीं अषाढकृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीऋषभदेवजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

जेठ अमावस अजित जिनेश, विजया उर जितशत्रु नरेश।
आये वैजयंत सु विमान, नगर अजोध्या मंगल थान।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णामावस्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

चय ग्रीवक फाल्गुन सित जानो, आठै दृढरथ तात बखानो।
सेना मात नगर सावित्री, संभव जगत कियो सु पवित्री।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लाष्टम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

विजय विमान अजोध्या आय, सिद्धारथ उर संवर राय।
सुदि वैशाख छठि दिन जान, श्री अभिनंदन गर्भ प्रमान।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

श्रावण सुदी की दोज अनूप, चये जयंत मेघप्रिय भूप।
मात मंगला नगर अजोध्य, सुमति जिनेश जगत प्रतिबुध्य।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

ऊपर ग्रैवेयकतैं आय, धारण तात सुसीमा माय।
नगर कोसंबी पद्म जिनेश, माघ कृष्ण षष्ठी नुत शेष।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

चय ग्रैवेयक मध्य विमान, भादव सित षष्ठी दिन जान।
सुपरतिष्ठ पृथवी दे माय, वाणारसि सुपार्श्व जिनाय।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

वैजयंत जय चंद जिनेश, चंदपुरी महसेन नरेश।
मात सुलक्ष्मणा गर्भ मझार, चैत वदी पांचै निरधार।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

आरण स्वर्ग चये जिनराय, पुष्पदंत रामा दे माय।
कहिकिंधा सुग्रीव नरेश, फागुण वदि नौमि निशिशेष।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

अच्युत स्वर्ग सुनंदा माय, भद्दलपुर शीतल जिनराय।
द्रिढरथ तात जगत विख्यात, चैत असित अष्टमिकी रात।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१०।।

पुष्पोत्तर चय विमलादेवी, सिंहपुरी सुर देवी सेवी।
श्री श्रेयांस विमल गृह आये, जेठ असित अठि मंगल गाये।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाष्टम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।११।।

महाशुक्रतैं चये जिनेश, वासुपूज्य वसुपूज्य नरेश।
विजया मात चंपापुर थान, छट्ठ अषाढ असित भगवान।।

ॐ ह्रीं अषाढकृष्णषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२।।

सहस्रारतैं विमल जिनेश, कंपिल्लाकृत धर्म नरेश।
मात सुसीमा गर्भमंझार, जेठ कृष्ण दशमी दिन सार।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णदशम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१३।।

चय पुष्पोत्तर नगर अजोध्या, सिंघसेन नृप सूर्य्या सुभध्या।
कार्तिक असित अनंत जिनेशा, प्रतिपद पूजत सकल सुरेशा।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णप्रतिपदायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीअनंतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१४।।

चय सर्वारथ राजलपुरी, मात सुव्रता गुण सुंदरी।
राजा रत्नधर्म जगदीश, आठैं सुदि वैशाख जगीस।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाष्टम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१५।।

तजि सरवारथ सिद्धि विमान, हस्तिनागपुर नगर प्रधान।
विश्वसेन अइरादे मात, भादव शान्ति कृष्ण दिन सात।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णसप्तम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१६।।

सरवारथसिधितैं अहमिंद्र, हस्तिनागपुर सूर्य नरिंद्र।
मात श्रीमती कुंथु जिनेश, श्रावण वदी दशमी निशिशेष।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णदशम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१७।।

अपराजित विमानतैं आय, हस्तिनागपुर मित्रा माय।
अरह जिनंद सुदर्शनराय, फागुण सित तिज गर्भ सुभाय।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लतृतीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरहनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१८।।

अपराजित विमानतैं आये, मिथिलापुरी कुंभ नृप जाये।
मल्लिजिनेश सुरेशा जननी, चैत सेत प्रतिपद अघहरनी।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लप्रतिपदायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१९।।

प्राणततैं चय पद्मा मात, गर्भ लियो सुहमित्र जु तात।
मुनिसुव्रत जिन ससग्रहनग्र, श्रावण असित दूज तिथि अग्र।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२०।।

(छंद पाईता)

अपराजिततैं नमि आये, मिथुलापुर विप्रा माये।
विजया राजा विख्याता, अश्वनि वदी दोज सुगाता।।

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२१।।

अपराजित नेमि जिनंदा, शौरीपुर शिवा अमंदा।
तहँ समुदविजय है भूपा, कार्तिक सित छट्ठ अनूपा।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२२।।

(दोहा)

प्राणततैं पारस प्रभु, वाणारसी वैशाख।
अश्वसेन वामा सती, दूज असित जिन भाख।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२३।।

पुष्पोत्तरतैं वीर जिन, त्रिशला उर आषाढ।
सिद्धारथ सित षष्ठी दिन, कुंडलपुर सुर ठाढ।।

ॐ ह्रीं अषाढशुक्लषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२४।।

ये दिन गर्भकल्याणके, पूजत सब सुर आय।
हम पूजत वसु दर्व अब, उच्छव मंगल गाय।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२५।।

जयमाला

(दोहा)

वृषभ आदि चौवीस जिन, गर्भकल्याणक सार।
ताको कछु वरनन करौं, भक्ति भाव उर धार॥१॥

(तोटक छंद)

पहिले षट मास रहे जब ही, तब इन्द्र सु प्रथम विचार सही।
छह मास सु आयु रही जिनकी, तुम धनपति जाय करो विधकी॥२॥

तब आय कुबेर जु नग्रि रची, कनका रतनामय सोभ सची।
वरषा नृप आंगण में नितही, अध तीन किरोड़ सु रत्न लहीं॥३॥

तिहिं देखत जीव मिथ्यात गये, जिन महिमातैं सम्यक्त ठये।
पुनि आइय गर्भ जिसी दिनजी, तब मात सु स्वप्न लई इमजी॥४॥

मृगराज वृषभ गजराज लख्यो, जुगमीन सरोवर सिंधु अख्यो।
जुगमाल सु कुंभ हरी कमला, शशि सूर्य धनंजय निर्धुमिला॥५॥

हरिपीठ भवन धरणेन्द्र कही, सुरराज विमान ए सोल कही।
उठ मात सु प्रातक्रिया करिकैं, पतिपैं विरतंत कह्यो निशिके॥६॥

तब अवधि सुज्ञान विचार कहै, तुव गर्भ जिनेश्वर आन लहै।
सुन दंपति मोदभरी अति ही, फुनि आसन कंप भई चव ही॥७॥

तब आय सु सप्त समाज लिये, जिन मात रु तात सनान किये।
पुन पूजि जिनंद सु ध्यान करी, निज पुण्य उपाय गये सुघरी॥८॥

सुर देवि सु सेव करे नितही, जिन मात रमावन की चित ही।
केई ताल मृदंग सु बीन लिए, मुरचंग अनेक सु नृत्य किए॥९॥

इम षष्ट पचास कुमारी करैं, अपने अपने कृत चित्त धरैं।
इन आदि अनेक नियोग भई, कहि कौन सके मैं मंद धिई॥१०॥

तुमरो इक नाम अधार हिये, अनुरै सब जाल वृथा गनिये।
तिसतैं अब नाथ कृपा करिये, भव संकट काट सुधा भरिये॥११॥

(सोरठा)

गर्भकल्याणक मांहिं, महिमा श्री जिनराजकी।
देखत पातिक जांहिं, तातैं निशदिन ध्यावहू॥१२॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मकल्याणक-पूजा

(छंद त्रोटक)

जिनराजको जन्म सुजान हरी, नुत आय सु लेय गयो गिररी।
तित जन्म नियोग कियो सगरी, तिन्हु थापतु हौं त्रय वारुचरी॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्ताश्चतुर्विंशति-जिनेन्द्राः ! अत्रावतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वानम्। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः इति स्थापनम्। अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(छंद त्रिभंगी)

पद्मद्रह नीरं गंध गहीरं, तर्जित सीरं हरि पीरं;
भृंगार सुधारा नाल सुधारा, देत सुधारा सुखसीरं।
चौबीस जिनेशं हरति कलेशं, नमत सुरेशं चक्रेशं;
तुम पूजन आयो शीस नमायो, तारि तारि हे खग्गेशं॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन दाह निकंदन, कदलीनंदन संग घसै;
तव चरण चढावत गुणगण गावत, ताप नशावत सुख परसै।
चौबीस जिनेशं हरति कलेशं, नमत सुरेशं चक्रेशं;
तुम पूजन आयो शीस नमायो, तारि तारि हे खग्गेशं।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता उनहारे तंदुल सारे, अनियारे तव पद धारे;
हे जिनवर स्वामी करुणाधामी, अंतरजामी भवि तारे। चौ०

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुंदर मनहारे नयनन प्यारे, पंच वरणमय कुसुम लिये;
तुम पादसु अर्चित शिवमगचर्चित, रतिपति तर्जित समर्थ ये। चौ०

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सुनीके उत्तम घीके, सद्य अलीके जु अमी के;
करुं क्षुधा निवारन आकुलवारन, समताकारन ढिग धरके। चौ०

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक तम नाशक सुपर प्रकाशक, मणि आदिक बहु भेद लये;
तव चरण चहोडुं भ्रमतम खोऊँ, निज निधि बेउं सुमन दए। चौ०

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

घनसार उसीरं चंदन चूरं, दशविधि पूरं धूप करं;
दस बंध जरावत धूम्र उडावत, अलिगन आवत नृत्य करं। चौ०

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल मिष्ट सु प्रासुक सोरभ वासुक, उपमात्रा सक सुच्छ खरे;
जिन पद तर धारे हो अविकारे, सागर पारे मोक्ष वरे।
चौबीस जिनेशं हरति कलेशं, नमत सुरेशं चक्रेशं;
तुम पूजन आयो शीस नमायो, तारि तारि हे खग्गेशं।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल आदिक लीजे अर्घ्य सु कीजे, गुणगणगीजे नच्चिजे;
तव ध्यान धरीजे आनंद भीजे, निज रस पीजे उच्चीजे। चौ०

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक-अर्घ

(अडिल्ल)

चैत्र असित नवमी श्री वृषभ जिनंदजी,
आयु चौरासी लाख पूर्व सुखकंदजी।
धनुष पांचसै तुंग कनक तन सोहनो,
चिह्न वृषभ जिनपद नमों मन मोहनो।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीऋषभदेवजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

जन्म दिवस सित माघ अजित दशमी कह्यो,
आयु बहत्तरि लाख पूर्व गज चिह्न लह्यो।
हेम वरण तन धनुष अर्द्धशत चारजी,
जजों चरण वसु दर्व लेय नमि भालजी।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लदशम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

कार्तिक सित पुनों श्री संभवनाथजी,
जन्म लयो तन हेम वरण सुखकारजी।
धनुष च्यारसै तुंग चिह्न हय को कह्यो,
आयु पूर्व लख साठ जजत तिन अघ दह्यो।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लपूर्णिमास्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।३।।

अभिनंदनको जन्म माघ सित जानिये,
द्वादसि कंचन वरण चिह्न कपि मानिये।
धनुष अर्द्धशत तीन ऊंचाई तन लसै,
आयु लाख पंचास पूर्व जजि शवि वसै।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।४।।

चैत्र शुक्ल तिथि रुद्र संख्य श्री सुमतिजी,
लयो जन्म तन हेमवरण गुन वृंदजी।
आयु लाख चालीस पूर्व ग्रंथन कही।
कोकचिह्न वपु धनुष तीन शत की लही।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।५।।

पद्म चिह्न पद पद्म पद्म तन दुति लसै,
पद्म जिनेश्वर पाद पद्म पद्मा वसै।
आयु तीस लाख पुर्व्व त्रयोदशि शुक्ल ही,
कार्तिक चाप अढाइ शत वपु उच्च ही।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लत्रयोदश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।६।।

जेठ सेत तिथि अर्क प्रमित जिन जन्मये,
नाथ सुपारस हरित वरण जन सुख ठ्ये।
आयु पूर्व लख वीस चिह्न स्वस्तिक लये,
धनुष दोय शत उच्च काय जजि हर्षये।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

चंदवरण जिनचंद चिह्न पग चंद ही,
चंद्रादिक सुरवृन्द नमत जिन जन्म ही।
आयु लाख दश पुर्व्व पोष एकादशी,
असित चाप तन डेढ शतक ऊँची लखी।।

ॐ ह्रीं पोषकृष्णैकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

मार्गशीर्ष सित पुष्पदंत जिन जनमिये,
स्वेतवरण तन उच्च धनुष इक शत ठ्ये।
आयु लाख दो पूर्व्व सु प्रतिपद दिन कही,
मकर चिह्न पग निरखि जजों मन वच सही।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदायां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

माघ असित द्वादशि श्री शीतलनाथ जू,
जन्म लेत त्रिभुवनमें जयजयकार जू।
आयु लाख इक पुर्व कनक तन सोहनों,
नव्वे धनुष उतंग चिह्न श्री द्रुम गिनों।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१०।।

जन्म लयो श्रेयांस असित फागुण सही,
तिथि एकादशि मान वरण कंचन कही।
आयु चौरासी लाख वर्ष पग चिह्न है,
गैंडा अस्सी चाप काय उत्तंग है॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥११॥

फागुण कृष्ण चतुर्दशी वासव पूजिया,
वासुपूज्य जिन जन्म अरुन तन हूजिया।
आयु बहत्तरि लाख वरष धनु सत्तरे,
ऊँची काय प्रमान महिष चिह्न पगतरे॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यनाथ-जिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१२॥

सेत माघ तिथि चोथ प्रमित श्री विमल जू,
लयो जन्म सो विमल करो मम हृदय जू।
आयु वर्ष लख साठ चिह्न वाराहको,
हेम वरण उत्तंग धनुष तन साठको॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१३॥

कृष्ण जेठकी द्वादशी जन्म अनंत जू,
त्रिभुवन बजत बधाई तासु न अंत जू।
आयु लाख वर्ष तीस चिह्न पगहै दसे,
कंचन वर्ण पचास चाप उत्सेध हैं॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीअनंतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१४॥

धर्म जिनेश्वर जन्म माघ सित त्रयोदशी,
वज्रदंड पग चिह्न धनुष पन चौ लसी।
उच्च काय चामीकर वरण सोहावनों,
आयु लाख दश वर्ष जजत तिन अघ हनों।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१५।।

जेठ असित चौदस श्री शान्ति जिनंदजी,
भयो जन्म तन हेम वरण सुखकंदजी।
मृग लच्छन पग धनुष उच्च चालीसजी,
आयु लाख एक वर्ष नमों जगदीसजी।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१६।।

सित एकम वैसाख कुन्थु जिन अवतरे,
कंचन वरण सुचिह्न अजा मुख पग धरे।
आयु सहस पंचानवे वर्ष सु गाइया,
धनुष तीस पन उच्च काय सब भाइया।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री कुन्थुनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१७।।

मार्गशीर्ष सित चौदसि अरह प्रभु भये,
सुवरण सुवरण जानि मीन लच्छन ठये।
धनुष तीस उत्तंग काय जिम भान ही,
आयु चौरासी वर्ष सहस परमान ही।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरहनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१८।।

अगहन सित एकादशीके दिन मल्लजी,
जन्म लेत सब जीव भये निःसल्लजी।
हेमवरण उत्तंग धनुष पनवीस है,
आयु सहस पंचास पांच वर्ष कुंभ है।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लैकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१९।।

श्री मुनिसुव्रत जन्म दशै वैशाख ही,
असित पक्ष तन श्यामा वरण श्रुत भाख ही।
आयु सहस वर्ष तीस चिह्न कच्छप धरै,
उन्नत चाप सु वीस काय सब मन हरै।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।२०।।

वदी दशै सु अषाढ नेमि जिन अवतरे,
तीन लोक सुरनरा सकल आनंद भरे।
हेम वरण तन धनुष उच्च दस पन सही,
वर्ष सहस दश आयु चिह्न पद्म जु कही।।

ॐ ह्रीं अषाढकृष्णदशम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।२१।।

(चौपाई)

श्रावण सुदि छठ नेमि जिनंद, स्याम वरण तन लखि आनंद।
शंख चिह्न धनु दश उत्तंग, आयु सहस एक वर्ष लहंत।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।२२।।

पौष कृष्ण एकादशि जन्मे, पारस देव हरित रंग तनमें।
नाग चिह्न नव हाथ ऊचंत्तं, आयु वर्ष एक शतक भनंतं।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२३।।

(इंद्रवज्रा)

श्री वर्धमानं जिन चैत्र मासे, त्रयोदशी सेत सु हेम वर्ण।
उत्तंग हस्ताध्विस सिंह चिह्नं, सप्ततिं वर्ष द्वि मितः सु आयु।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२४।।

(सोरठा)

चौवीसों भगवान, नमत सुरासर पाद जसु।
जन्मकल्याणक नाम, जजौं अर्घ वसु दर्व ले।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२५।।

जयमाला

(दोहा)

जन्म होत जिनराजको, नारकि हू सुख थाय।
औरनि की फुनि का कथा, आनंद उर न समाय।।१।।

(छंद-जगसार हो)

जन्म होत जिनदेव को जगसार हो, बाजे अचरज बाज।
कल्पदेव घर घंट जी जगसार हो, ज्योतिष घर हरिनाद।।
हरिनाद व्यंतर ढोल बाजै भवन के घर शंख ही,
इम देखि सुर तब अवधि कीनो जनम जिन निहसंक ही।

तब सात डग चल नमन कीनौ सैन सात संवारिया,
सो एक एक मैं सात जानौं चले जय जय कारिया।।२।।

ऐरावत तब ही सज्यो जगसार हो, जोजन लाख प्रमाण।
वदन एक शत सोहनो जगसार हो, वसु वसु दन्त महान।।
महान रद प्रति एक सरसो सरन सो पन बीस ही,
कमलनी कमलनी कमल पच्चीस कमल दल अठ सो सही।
दल दलहिं अपछर नृत्य करहिं सु हाव भाव संगीत ही,
सब भई कोड सु बीस सात सु लिए ताल अभीत ही।।३।।

चढि सुरपति पुर आइयो जगसार हो, देय प्रदक्षिण तीन।
शचि जाय जननी ढिग सार हो, सुख निद्रा तब दीन।।
तब दीन बालक मात ढिग मायामयी फुनि जिन लियो,
तब ल्याय जिनपति देत सुरपति, नमन करी जिन तिन लियो।
देखत तृपत नहीं होत इन्द्र सु सहस्रलोचन तब करी,
ईशान इन्द्र सु छत्र धर शिर चमर जुग ऊपर ढरी।।४।।

जाय सुरेन्द्र गिरेन्द्र पय जगसार हो, पांडुकशिला विशाल।
शत जोजन लांबी कही जगसार हो, अधविष्कुंभ निहार।।
निहार ऊँची आठ भाखी अर्द्धचन्द्राकार ही,
तापैं सिंहासन कमल आवन पूर्व मुख जिन थाप ही।
मेरु ऊपर रच्यो बहु विध कलश सहस्र अठोत्तरे,
पंचम उदधि जलभरे मणिमय कमलनि सोखरे।।५।।

जोजन आठ गहीर है जगसार हो, चव जोजन चकराव।
मुख जोजन इक सोहनो जगसार हो, भाख्यो श्री जिनराव।।

जिनराव सुरपति नहवन कीनो अघघ भभ भभ धार ही,
फुनि पोंछी शचि शृंगार कीनो यथा उचित सुधार ही।
फिर आय मात जगाय बालक देय नाम कह्यो सही,
तब हरष जुत संगीत नृत्य आरंभ कीनो सुरत ही।।६।।

नाना विधि को वरण वै जगसार हो, देखत अद्भुत थाय।
बाजै ताल टंकोर ही जगसार हो, बीन बांसुरी गाय।।
गाय तकिट धकिट सु धुमकिट तकथि लांग मृदंग ही,
सारंगी डाडा रासनन सो तारडिर्डिर्ट्टढंग ही।
तहं तान लय सुर ग्राम मुर्छन भेद जुत तननन सही,
चट पट सु अट पट झट नटत ठट नृत्य तांडव ठनत ही।।७।।

इम बहु पुन्य उपाय ही जगसार हो, एक भव धारी होय।
धनपति रखि निज थल गयो जगसार हो, बाल चन्द्र वृद्ध होय।।
होय वृद्ध सु बाल जिनपति मात उर आनंद लहैं,
तब देख जुवान विवाह गुरुजन करन प्रति जिनपति कहै।
तामें सु जिन उनईस कीनो राजभोग संजोग ही,
तामें भए त्रय चक्रधर जिन शान्ति कुन्थु अरह कही।।८।।

ग्रहणी पांच जु ना गृहे जगसार हो, वासुपूज्य जिनराव।
मल्लि नेमि श्री पार्श्वजी जगसार हो, महावीर शिवचाव।।

शिव चाव जिन त्रय ज्ञान जुत दश जन्म अतिशय सब लहै,
इह जन्मकल्याणक सु महिमा थकित ह्वै बुधजन रहै।
सो अल्पमति मैं कहन उमग्यो कहौं कैसे नाथ जी,
जिम बाल जल-प्रतिबिंब चाहै लहैं कैसे हाथ जी।।९।।

(धत्ता)

श्री जिनगुणमालं विविध प्रकारं अमल अपारं सुखकारी,
जो अहोनिश ध्यावै, पाप नशावै, शिवपद पावे दुखहारी।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपकल्याणक-पूजा

(छंद रोला)

इह संसार असार भावना द्वादश भाई,
लौकान्तिक सुर आय बोध पद पुष्प चढाई।
चढि शिबिका वन जाय, धर्यो प्रभु जोग उदारा,
सो प्रभु तिष्ठो आय, करो मम हृदय उजारा।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तचर्तुविंशतिजिनेन्द्राः। अत्रावतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वानम्। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः इति स्थापनम्। अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् इति सन्निधिकरणम्।

प्राणी रेवा पगाज मनोद्भवा, सुंदर सरिनीर सु ल्याय।
प्राणी कंचन भृंग भराईये, दीजै त्रयधार बनाय।
प्राणी श्री जिनवर पद पूजिये, जाके पूजत सुरशिव थाय।
प्राणी श्री जिनवर पद पूजिये।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी अगर तगर कर्पूर ले, मलयागिर संग घसाय।
प्राणी रतन कटोरी धारिये, दीजे तव चरण चढाय।
प्राणी श्री जिनवर पद पूजिये, जाके पूजत०।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी देवजीर सुखदासके, अक्षत मुक्ता उनहार।
प्राणी त्रिभुवन पति चरणन धरो, अक्षय पद हो ततकाल।
प्राणी श्री जिनवर पद पूजिये, जाके पूजत०।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी सुमन सुमनके ल्याईये, घ्राणन नयनन सुखकार।
प्राणी श्री जिनचरण चढाईये, निर्मूल समर निरवार।
प्राणी श्री जिनवर पद पूजिये, जाके पूजत सुरशिव थाय।
प्राणी श्री जिनवर पद पूजिये, जाके पूजत०॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी नेवज षट् रससौं भरे, सोरभ जुत बहुविध ल्याय।
प्राणी क्षुधा वेदनी नासको, जिनपत पद देहु चढाय।
प्राणी श्री जिनवर पद पूजिये, जाके पूजत०॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी दीप ललित सो जगमगे, जगमग जोति जगाय।
प्राणी श्री जिनपद अर्चन करों, मिथ्या तम मूल नसाय।
प्राणी श्री जिनवर पद पूजिये, जाके पूजत०॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी धूप दशांग बनायके, खेऊँ जु हुतासन माँहि।
प्राणी अष्ट करम जर धूम्र मिस उड भागे दशदिश जाँहि।
प्राणी श्री जिनवर पद पूजिये, जाके पूजत०॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी श्रीफल आदि सुफल लियो, नाना रंग स्वाद अपार।
प्राणी मोक्ष सुफल कारण जजों, दाता लखि औरन टार।
प्राणी श्री जिनवर पद पूजिये, जाके पूजत०॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी जल फल आदि सु द्रव्य ले, पूजो गुण गाय बजाय।
प्राणी देहु अनर्घ्य सु पद हमैं, सब लायक हो जिनराय।
प्राणी श्री जिनवर पद पूजिये, जाके पूजत सुरशिव थाय।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक-अर्घ

(अडिल्ल)

चैत्र वदी नवमी आदीश्वर तप धरो,
गजपुरमें श्रेयांस भुवन पारन करो।
दीक्षा वट तरु तले रहे छदमस्थजी,
वरष सहस एक चार सहस नृप संघ जी।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीऋषभदेवजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

सेत माघ नवमी धारो तप अजितजी,
जंबू तरुतल ध्यान सहस नृप संघजी।
लियो अहार अयोध्या नृप ब्रह्मदत्तके,
रहे वर्ष छदमस्त द्विषट पति जननके।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लनवम्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

मार्गशीर्ष पूनों दिन संभवनाथजी,
सालवृक्ष तल जोग सहस नृप साथजी।
कियो पारणो नृप सुरेन्द्र सावित्रीके,
रहे वर्ष छदमस्त चौद पति जननके।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लपूर्णिमास्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

माघ सुदी दुवादशि अभिनंदन लए,
सरलू तरुतल ध्यान विनीता पुर गए।
दियो दान इंद्रदत्त पंच अचरज भए,
अष्टादश छदमस्त वर्ष नृप सहस ए।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।४।।

सुमतिनाथ वैशाख सेत नवमी लये,
वृक्ष प्रयंगू तलै जोग विजया गये।
दियो दान नृप पद्मा पंच अचरज भये,
वीस वर्ष छदमस्त सहस नृप संग ठये।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लनवम्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।५।।

कार्तिक असित त्रयोदशी पद्मप्रभू सही,
सहस एक नृप संग प्रयंगू तरु लही।
मंगलपुर नृप सोमदत्त घर असन ले,
रहे मास छदमस्त छह जु घातिय गले।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्री पद्मप्रभजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।६।।

जेठार्जुन द्वादशि नृप एक सहस्र ही,
धारी दीक्षा श्री सुपार्श्व तरु सिरसही।
पाटलपुर नृप महादत्तके असन ले,
रहे वर्ष छदमस्त पांच चव अरी दले।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।७।।

पोष असित एकादशि चंद्र जिनंदजी,
नागवृक्षतल भूप सहस निरफंदजी।
पद्म खेट नृप सोमदेव घर क्षीर ले,
रहे मास छदमस्त तीस घाती चले।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।८।।

पुष्पदंत एकम सित अगहनको धरो,
भूप सहस एक संग साल तरु तप करो।
पुहुपक नृप पुर खेत सेत जिन सेत ले,
रहे मास छदमस्त चार चार जु टले।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदायां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।९।।

माघ कृष्ण द्वादशि पलासतरु तप लियो,
शीतलनाथ जिनेश सहस्र नृप संग कियो।
अरिठ पुनर्वसु भूप सदनके असन ले,
मास तीन छदमस्त जजों वसु दर्व ले।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१०।।

फागुण श्याम एकादशि तंदुक तल धरो,
श्रेयांस जिनेश सहस्र नृप तप करो।
नृप सुनंद पुर इष्ट भुअनके पारणो,
मास दोय छदमस्त नमो मल हारणो।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।११।।

वासुपूज्य जिन फागुण श्याम चतुर्दशी,
जयां छीय तल जोग भूप सत षट वसी।
सिद्धारथ पुर पारण नृप जय के घरे,
मास एक छदमस्त जजों तिन अघ हरे।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१२।।

सेत माघकी चोथ विमल जंबू तले,
भूप सहस एक संघ धरी दीक्षा भले।
भूप विशाख महापुरके पारण करो,
मास तीन छदमस्त जजों मम भव हरो।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१३।।

(सुंदरी)

जेठ द्वादशि असित अनंतजी, भूप सहस सु पीपल संतजी।
धारणपुर नृप धर्म सु सिंहके, पारणो छदमस्त दु मासके।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीअनंतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१४।।

(अडिल्ल)

धर्मनाथ सित माघ त्रयोदशि तप धरो,
दधि पर्णी तरु तले सहस नृप संग करो।
मानपुर नृप सुमित्रके भुवन पारणों,
मास एक छदमस्त जजों शिव कारणों।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१५।।

(सुंदरी)

जेठ असित चतुर्दशि शान्तिजी, नृप सहस नंदी तरु कान्तिजी।
धर्ममित्र सुमनसके पारने, वर्ष षोडस छदमस्त जु गने।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१६।।

कुंथु प्रतिपद सित राधा गनो, तिलक तरुतल नृप सहसय भनो।
नृप पराजित मंदिर असन ले, वर्ष षोडस छदमस्त जु भले।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१७।।

सेत अगहन दशमी तप धरे, अरह भूप सहस आम्र जु तरे।
हस्तिनापुर नंद सुखेनके, पारणों छदमस्त जु पूर्वके।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लदशम्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरहनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१८।।

(अडिल्ल)

अगहन सित एकादशि मल्लि जु तप धरे,
तरु अशोक नृप सत षट छ ऊपर करे।
वृषभदत्त नृप चक्र नगर के पारणों,
दिन छह ही छदमस्त जजों दुख नाशनो।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लैकादश्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१९।।

मुनिसुव्रत वैशाख असित दशमी धरे,
चंपक तरु तल ध्यान सहस नृप संग खरे।
मिथिलापुर नृप दत्त दान पय जिन दिये,
रहे मास छदमस्त एकादश तप किये।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२०।।

दशमी असित अषाढ नमि जिन तप लियो,
मौलसरी तरु तलै सहस नृप संग कियो।
राजगृही नृप सन्नयके पारण करो,
गृह परमित छदमस्त वर्ष भव दुख हरो।।

ॐ ह्रीं अषाढकृष्णदशम्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२१।।

श्रावण सित षट मेष श्रेणि तरु नेमिजी,
धारो तप नृप सहस परिषह सहनजी।
लियो अहार सु द्वारावति वरदत्त के,
दिन छप्पन छदमस्त घोर तप तपन के।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२२।।

पोष वदी एकादशि श्री पारस लयौ,
नृप सत छह छह ऊपर तरु धव तप गह्यौ।
लियो अहार सु काम्या कृत नृप धन्यके,
मास चार छदमस्त विविध विध तपनके।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२३।।

अगहन दशमी श्याम साल तरु तप धरे,
वर्द्धमान जिनराय तीन सत नृप खरे।
बाहुल नृप पुर कुंड भवन पारण लये,
रहे वर्ष छदमस्त दुआदश तप ठये।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२४।।

(दोहा)

चौवीसों भगवानके, तप मंगल दिन जोय,
नमो अंग वसु दर्व ले, विघ्न निघ्न सब होय।।

ॐ ह्रीं तपःकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।२५।।

जयमाला

(सोरठा)

जान्यो संयम काल, तन धन जग सब अथिर लखि।
तज्यो सर्व जंजाल, शिवसुखकारी तप धरो।।१।।

(रोला छंद)

संयम को लखि काल प्रभु वैराग चितारो,
तन धन जोबन रूप विमल सब अथिर विचारो।
कोउ क्षेत्र सु काल दर्व कोउ जीव न ऐसो,
जाके शरणे जाय हरे भव संकट तैसो।।२।।

यह संसार मझार चतुर्गतिको दुख भारी,
जन्म मरण भय रोग शोग विस्मय पर हारी।
सदा एकलो भ्रमैं संग साथी कोउ नांही,
करै आप जो कर्म सहै दुख भव भव मांही।।३।।

पुत्र कलत्र जु मित्र मात पितु धन धान्यादिक,
परगट दीखै भिन्न मरण मैं देहऊ वादिक।
महा अशुचि यह देह सप्त मलसूत्र भरी है,
कृमि आदिक बहु जीव तासु तैं नेह धरी है।।४।।

सदा कर्मवश परे आपको चेतन कीनो,
जैसे उदय जो आय बहुरि फुनि तैसो लीनो।

संवर को नहीं लेस भयो अब ही तक माँहीं,
जासो रुकै जु कर्म सोइ संजम बिनु नाँहीं।।५।।

कर्म अनंते लगे निर्जरा विनु नहीं जाँहीं,
सो विशुद्धितैं होय आज लौं नांहि लहाहीं।
षट् द्रव्यनसों भरो लोक कोउ कर्ता नाँहीं,
कर्ता हर्ता नाँहि भ्रमै यामैं जिय याही।।६।।

दुर्लभ है यह ज्ञान जथारथ सम्यक् पाये,
विनु सम्यक् यह जीव निगोदादिक दुख थाये।
धर्म दया द्वै भेद स्वपर पुन दशधा गाये,
वस्तु सुभाव सु धर्म आज लों नाँहीं पाये।।७।।

इत्यादिक भावना भावते आये देवा,
लौकान्तिक पद पुष्प चढाय कहै यह भेवा।
धन्य दिवस यह आज धन्य यह घडी भली है,
धन्य तुम्हारी बुद्धि धन्य तुम जोग्य यही है।।८।।

हम मति मंद कहा कहैं तुम आप प्रबुद्धी,
हम नियोगतैं कहि नमो कहि गये सुबुद्धी।
सौधर्मादिक इन्द्र आय पालकी सवारी,
प्रभु शृंगार कराय स्वजन ममता निरवारी।।९।।

चढे पालकी आप प्रथम लीनो नर राजा,
पुन इन्द्रादिक देव लेय उद्यान विराजा।
उत्तर शुद्ध छिति निरखि वृक्ष तल योग सुधारा,
वस्त्राभूषण डार लोंच मुष्टि कर डारा।।१०।।

होय दिगम्बर 'सिद्ध नमः' कहि ध्यान सु लीनो,
इन्द्रादिक तब पूजि तीसरो मंगल कीनो।
संयम धारत ज्ञान तूर्य प्रभुको तत क्षण ही,
एक महूरत मध्य भयौ भाख्यो सब तुम ही।।११।।

केश पंचमोदधि क्षेप निज थान गए सब,
प्रभु पूरण कर योग पारणौ कर आए तब।
नानाविध तप घोर कियो चूरण करमनको,
सो प्रभु होउ सहाय हरो दुख मेरे मनको॥१२॥

(दोहा)

चौवीसों जिनरायके, मंगल परम रसाल।
जो पढसी सुनसी सदा, पासी मोक्ष विशाल॥१३॥

ॐ ह्रीं तपःकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो महार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

ज्ञानकल्याणक-पूजा

(छंद रोला)

बाह्याभ्यंतर संग त्याग थिर शुक्ल ध्यान मैं,
तिरसठ को क्षय पाय अनन्त चतुष्टय चिन मैं।
समवशरण जुत देव दोष अष्टादश रहिता,
कृपासिंधु इत आय तिष्ठ सनहित अघ हरता॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनेन्द्राः ! अत्रावतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वानम्। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः इति स्थापनम्। अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(गीता छंद)

तव जस सु उज्ज्वल स्वच्छ शीतल आस प्यास बुझावनों,
ताको सु पावन परम पावन नीर मिसी कर आवनों।
चौवीस जिन जगदीश शीष सुरेश नर भुवनेशके,
ताके सु पद अरचत जगत विरचत सु परचत निधिके॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यात नाश प्रकाश क्षायिक लब्धि आनंदघन तुही,
ताके सु कारण ताप वारण गंध पावन जज तुही।
चौवीस जिन जगदीश शीष सुरेश नर भुवनेशके,
ताके सु पद अरचत जगत विरचत सु परचत निधिके॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षतको जु क्षतकर पाय पद अक्षत सु अक्षत हो सही।
निरइच्छ पतके अर्थ इह लायो सु अक्षत ढिग तुही॥ चौवीस०॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

तव नामतैं यह काम डरपै हरिहरादिक वसि किए।
इम जानि तव ढिग पुष्प लायो हरौ मनमथ दुख दिए॥ चौवीस०॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनी नास अबाध निज आनंद अमृत तृप्त हो।
सो हे चतुर आनन क्षुधा वारन करो मैं दुखित हों॥ चौवीस०॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह महा मोह प्रचंड नास सुज्ञान केवल निधि लई।
ताके सु अंतर घट निरंतर द्यो मुझे दीपक दई॥ चौवीस०॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यानानलें घन कर्म जारि सु धूम मिसि दशदिशि गए।
इम कहैं टंकोत्कीर्ण शुद्ध सुहेत हम धूप जु लए॥ चौवीस०॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अन्तराय नसाय पाय सु लब्धि अनुपम सुख मई,
ताके चहन सब अघदहन त्रिभुवन पति इह फल लई।
चौवीस जिन जगदीश शीष सुरेश नर भुवनेशके,
ताके सु पद अरचत जगत विरचत सु परचत निधिके॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम भए अतुल अनंत अनुपम अचल अव्याबाध हो।
सो अर्घ्य ले तव चरण पूजौं द्यो अनर्घ्य अगाध हो॥ चौवीस०॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक-अर्घ

(गीता छंद)

फागुण इकादशि श्याम प्रात सु आदि प्रभु केवल ठई,
गणि वृषभसेन सु आदि चौरासी चतुर्विध संघ लई।
चौतीस सहस सुवार लाख प्रमाण थिति केवल कहों,
इक लाख पूर्वम घाट वर्ष हजार इक नमि अघ दहों॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीऋषभदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

पोष शुक्ल इकादशी अपराह्न केवल अजित ही,
गणि सिंहासेन सु आदि नव्वै संघ चौविध इम लही।
सहस तीस सु लाख वारे थिति अवै केवल कही,
इक लाख पूर्वम घाट इक पूर्वांग द्वादश वर्ष ही॥

ॐ ह्रीं षौषशुक्लैकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

संभव चतुर्थि श्याम कार्तिक काल अपराह्निक लह्यो,
गणि चारुदत्त रु आदि इक शत पांच ऊपर संघ कह्यो।
लाख तेरे सहस तीस सु काल थिति केवल कही,
इक लाख पूर्वम घाट चव पूर्वांग चौदह वर्ष ही।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

पौष शुक्ल चतुर्दशी अपराह्न अभिनंदन लही,
गणि वज्र आदि सु तीन एक शत संघ चव लख चौदही।
तीस सहस सु केवली स्थिति लाख पूर्वम घाटि है,
पूर्वांग वसु सू वर्ष अष्टादश नमो साम्राज है।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लचतुर्दश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

चैत शुक्ल एकादशी अपराह्न केवल सुमति ही,
गणि चमर आदि सु सोल इकसत संघ चव लख चौदही।
पंचास सहस सु केवली थिति लाख पूर्वम घाट है,
पूर्वांग द्वादश वर्ष वीस नमौं नमौं सुख रास है।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

(अडिल्ल छंद)

पूनौ चैत सु पद्म प्रभु अपराह्न ही,
गणी वज्रबलि आदि ग्यार एक शत कही।
लाख सु साढे पंदरह संघ थिति पूर्व लख,
द्विवसु मित पूर्वांग मास षट घाट भख।।

ॐ ह्रीं चैत्रपूर्णिमास्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री पद्मप्रभनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

(गीता छंद)

श्री सुपारस छट्ठ फागुन असित अपराह्निक लही,
गणि चरम वलि आदिक सु नव्वै पांच चव संघ इम कही।
सो सहस तीस सु लाख चौदे केवली थिति कहत ही,
इक लाख पूर्वम घाट वर्ष सु नव रु वीस पूर्वांग ही।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णषष्ठ्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

सातैं फाल्गुन कृष्ण अपराह्निक सु चंद्र प्रभू सही,
गणि दंडिकादि सु तीन नव्वै संघ चव लख चौदही।
पुन सहस तीस सु केवली थिति लाख पूर्वम घाट है,
पूर्वांग चवविस मास तीन कह्यो जिनेश्वर नाथ है।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

कार्तिक दुइज सित पुष्पदंत सु लयो केवलज्ञान है,
गणि गर्भ आदि कहे अठ्यासी काल अपराह्नीक है।
चव संघ बारे लाख अस्सी सहस केवल कहत तुव,
इक लाख पूर्वम घाट पूरबअंग अठवीस मास चव।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वितीयायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीपुष्पदंतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

पौष कृष्ण चतुर्दशी शीतल सु अपराह्निक लह्यो,
अनागारादिक इक्यासी संग चव लख दश कह्यो।
फुनि अस्सी सहस सु केवली, थिति पूर्व सहस पचीस है,
तामैं सु वह्नि प्रमित घटाए मास जजत यतीस है।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१०।।

माघ कृष्ण अमावसी श्रेयांस पूर्वाह्निक लह्यो,
गणि कुंथु आदिक सत्तहत्तर संघ चव अठ लख कह्यो।
फुनि चार सहस सु केवली स्थिति लाख इकइस वर्ष है,
तामें सु मास घटाय दोय सु जजों तिन पद सर्म है।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाअमावस्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।११।।

(अडिल्ल छंद)

वासुपूज्य दोइज सित माघ पराह्न के,
गणि सुधर्म आदिक छांछट संगमान के।
सहस अट्ठत्तर लाख सात केवल सुनों,
हीन मास एक वर्ष लाख चौवन भनौ।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वितीयायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१२।।

(जोगीरासा)

माघ सुदी छठि विमल जिनेश्वर अपराह्निकमैं पायो,
गणी नंदरार्यादिक पचपन लख चार संघ इम थायो।
सहस इकहत्तर लाख सात अब केवल थिति भवि मानों,
मास तीन कम वर्ष लाख पंदरह मैं तुव धुन गानों।

ॐ ह्रीं माघशुक्लषष्ठयां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१३।।

चैत अमावस अपराह्निकमैं श्री अनंतजिन पायो,
गणि जयादि पंचास बताये संघ चारविधि गायो।
सहस चोरासी लाख सात गणि केवलमैं इम थाये,
हीन मास दुई लाख सु साढे सात वर्ष मन भाये।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअनंतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१४।।

पूसार्जुन पूनौं अपराह्निक केवल धर्म जिनेशं,
गणि अरिष्ट आदिक तैतालीस चार संघ नुत सेसं।
लाख सात छव्वीस सहस फुन चार शतक धनुगाजं,
हीन मास इक वर्ष अढाई लाख केवल जिनराजं।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लपूर्णिमास्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१५।।

पौष इकादशि अपराह्निक केवल प्रभु शान्ति जिनेशं,
गणि चक्रायुध आदि तीस छह संघ चारि कथितेसं।
लाख सात बाईस सहस फुनि तीन शतक तुम गानं,
केवल चौवीस सहस शतक नव चौरासी वर्ष प्रमानं।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लैकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१६।।

(रोला छंद)

तीज चैतसित अपराह्निक श्री कुन्थुजिनेश्वर,
गणि सु स्वयंभू आदि तीस पंच संघ चार गुरु।
पांच लाख फुन सहस वीस सत साढे तीना,
वत्सर तेइस सहस सतक सातजु चोतीना।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लतृतीयायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१७।।

(सवैया एकतीसा)

कार्तिक शुकल दुवादशि अपराह्निक केवल श्री अरह जिनंद,
गणि श्री कुन्थु नाम आदिक है तीस नमों सब सुख के कंद।
लाख पांच अरु सहस दशै सब संघ चार सेवत नित संत,
सहस बीस सत नव ऊपर चौरासी वर्ष धर्म वर्षंत।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरहनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१८।।

(गीता छंद)

पौष असित सुमल्लि केवल दूज पूर्वाह्निक लही,
गणि विशाखाचार्य आदि सु अष्ट विंशत पद गही।
संघ चार सहस पचानवे चार लाख प्रमान है,
केवल सहस चौपन सतक नव घाट दिन छह ज्ञान है॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णद्वितीयायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१९॥

वैशाख नवमी असित अपराह्निक सु मुनिसुव्रत लही,
गणि मल्ल आदि सु आठ दस चव संघ श्री जिन इम कही।
सहस अस्सी लाख चार सु देव पशु गण तीन ही,
कम मास ग्यारा वर्ष साढे सात सहस सु थिति लही॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णनवम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२०॥

(अडिल्ल छंद)

अगहन सित एकादशि नमि अपराह्न ही,
केवल गणि सोमादि सात दश जान ही।
संघ चार चोलाख सहस पैंसठ कही,
चौवीस सतक रु कानवे वर्ष जु थिति लही॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लैकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२१॥

(गीता छंद)

आश्विन सु प्रतिपद सेत पूर्वाह्निक सु केवल नेमि ही,
गणि ग्यार वरदत्तादि चार सु संघ संभव श्रुत लही।
चार लाख हजार अट्ठावन सु केवल में रहे,
वत्सर सतक जू सात घाट पचास छह दिन तैं रहे॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लप्रतिपदायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२२॥

(अडिल्ल छंद)

चैत्र चतुर्थी कृष्ण प्रात पारस प्रभु,
गणधर दशमें मुख्य स्वयंभू जिन विभू।
संघ चार चौलाख सहस चौपन कही,
सत्तर वर्ष सु हीन मास चव थिति लही।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२३।।

सित दशमी वैशाख पराह्न सु वीरजी,
गौतम आदि गणेश इग्यारह सूरजी।
संघ चार चौलाख सहस उनचास है,
वर्ष तीस धर्मोपदेश भवितार है।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२४।।

(दोहा)

चौवीसों भगवानके, तूर्य्य कल्याणक सार।
मैं पूजों वसु द्रव्य ले पाऊँ पद अविकार।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

जयमाला

(सोरठा)

होय दिगंबर रूप, क्षपक श्रेणि फुनि मांडि करि।
भए सयोगी भूप, नमो तासु वसु अंग नमि।।१।।

(पद्धडी छंद)

जब प्रगट्यो जिन केवल सु भान, आसन कंप्यो सुर असुर जान।
धनपति आज्ञा दीनी सुरेश, समवसृत आय रच्यो जिनेश।।२।।

इन्द्र हु परिवार समेत आय, जिन पूज भक्ति कीनी बनाय।
नर खग पशु असुर नमे जिनाय, बैठे निज निज कोठे सभाय।।३।।

तब समवशरण लखि इन्द्र हर्ष, तसु किंचित वर्णन लिखौ पूर्व।
प्राकार नीलमणि भूमसार, चहुँ दिश शिवाण वीस वीस हजार॥४॥

तापै सु कोट धनु किधौं आई, धूलिसाला पण रत्न भाई।
चहु दिश मैं मानस्तंभ चार, त्रै कोट रु कटनी धुजा सार॥५॥

तामैं जिनबिंब बिराजमान, सिंहासन छत्र चमर सुजान।
तोरण द्वारन मंगल सुदर्व, कंचन रतननसों खिचे सर्व॥६॥

ताके चहुँ दिस वापिका चार, मानिनको मान गलत निहार।
ताके आगे शालिका सार, पुष्पनि की बाडी दोउ पार॥७॥

फिर दुतिय कोट कंचन सुवर्ण, गोपुर द्वारन तोरण सुपर्ण।
अष्टोतर सत मंगल सु दर्व, द्वारन द्वारन निधि परी सर्व॥८॥

तामें नटशाला चहूँ ओर, तहाँ नटै अपछरा विविध जोर।
तहँ वन चारों दिसि सोभकार, चंपक अशोक आम्रादि चार॥९॥

इक इक दिश वृक्ष सु चैत्य एक, जिन बिंबांकित पूजत अनेक।
फुनि तृतिय कोट ताए सु हेम, ध्वजपंकति तूप सु रत्न जेम॥१०॥

चौथो जु फटिकमणि कोस कोट, ताके मध द्वादश सभा गोट।
चव कोट मध्य वेदिका पांच, अंतर मैं नाना विविध रांच॥११॥

कहुँ मंदिर पंकति शिला जोग, सामानिक गंधकुटी संजोग।
ताके मध कटनी तीन राज, तापै औ गंधकुटी जु छाज॥१२॥

तामैं सिंहासन कमल सार, जिन अंतरीक्ष शोभे अपार।
इत्यादिक वर्णन को समर्थ, अब कहों छियालिस गुण सु अर्थ॥१३॥

जय जन्मत ही दश भये एह, बल नंत अतुल सुंदर सु देह।
जय रुधिर श्वेत अरु वचन मिष्ट, शुभ लक्षण गंध शरीर सिष्ट॥१४॥

जय आदि संहनन संसथान, मलरहित पसेव हु रहित मान।
फुन केवल उपजे दश जु एम, विद्येश्वर सब चतुरानन नेम॥१५॥

आकाशगमन अदया-अभाव, दुरभिक्ष जु शत जोजन न पाव।
अब इन पांचनसो रहित देव, उपसर्ग केश नख वृद्ध सेव॥१६॥

टमकार नेत्र कवला-अहार, छाया अब सुरकृत दस सु चार।
सब जीव मैत्रि आनंद लहाहीं, अर्द्धमागधि भाषा सब फलाहिं॥१७॥

दर्प्पन सम भू निरकंट सृष्टि, सौगंध पवन गंधोद वृष्टि।
नभ निर्मल अरु दश दिशहु जान, पद कमल रचत जय जय सुगान ॥१८॥

वसु मंगल दर्व रु धर्मचक्र, अगवानी सुर ले चलत शक्र।
अब प्रातिहार्य वसु भेव मान, सिंहासन छत्र चमर सु जान॥१९॥

भामंडल दुंदुभि पहुप वृष्टि, दिव्य ध्वनि वृक्ष असोक सृष्टि।
दरशन सुख वीरज ज्ञान नंत, तुमही मैं औरन ना लहंत॥२०॥

अरु दोष जु अष्टादश कहेय, औरन मैं है तुम मैं न तेह।
सो जन्म मरण निद्रा रु रोग, भय मोह जरा मद खेद सोग॥२१॥

विस्मय चिन्ता परस्वेद नेह, मल वैर विषैरति क्षुध त्रिषेह।
सर्वज्ञ वीतरागता जेह, सो तुम मैं और न बनै केह॥२२॥

तुमरो शासन अविरुद्ध देव, बाकी संसय एकान्त भेव।
तुम कह्यो अनेकान्त सु अनेक, यह स्याद्वाद हत पक्ष एक॥२३॥

सो नय प्रमाण जुत सधै अर्थ, सापेक्ष सत्य निरपेक्ष व्यर्थ।
युक्तागम परमागम दिनेश, बाकी निशि चोर इवाकु भेष॥२४॥

भवितारण तरण तुही समर्थ, इह जान गही तुम शरण अर्थ।
मो पतित दोष पर चित न देहु, अपनी बिरदावलि मन धरेहु॥२५॥

हे कृपासिन्धु यह अर्ज धार, भै रोग तिमिर मिथ्या निवार।
मैं नमों पाय जुग लाय शीस, अब वेग उबारो है जगीश॥२६॥

(छंद)

जय जय भवितारक, दुर्गति वारक, शिवसुख कारक विश्वपते।
हे मम उद्धारक भवदधि पारक, अखिल सुधारक द्रिष्ट इते॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोक्षकल्याणक-पूजा

(रोला छंद)

आठों कर्म विनाश पाय गुण आठ अनंता,
भए चिदानंद मग्न निरंजन नित्य सु संता।
कृतकृत्य जु तनु वात शीश जगदीश विराजै,
ज्ञायक लोकालोक आय तिष्ठौ दुख भाजै॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनेन्द्राः! अत्रावतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वानम्। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः इति स्थापनम्। अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(रेखता)

हिमानिका लिया पानी समानी चंद सीतानी,
दिया धारा जु हित सानी, निशानी सौख्य अमलानी।
जजों चौवीस जिन प्यारे, अतुल निधि ज्ञान अविकारे,
करो भव पार भवपारे सु भावा भाव कथहारे॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हरी चंदन केलि नंदन, घसौं आताप हरि कंदन,
चढाऊँ पद्म जग वंदन, लहौं निर्वाण निर्फंदन। जजों चौवीस०

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धरे अक्षत चरण आगे, निशापति किरण लज भागे,
किधौं जो पुन्न तुम त्यागे, परो यह रस अति जागे। जजों चौवीस०

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुमन अति सुमन से ल्याऊँ, सुमन के सुमन से ध्याऊँ,
सु मनमथ को हरो पाऊँ, निजानंदात्म गुण गाऊँ।
जजों चौवीस जिन प्यारे, अतुल निधि ज्ञान अविकारे,
करो भव पार भवपारे सु भावा भाव कथहारे।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ये अक्षक पक्ष को लक्षक, सुभक्षक स्वक्ष क्षुध नक्षक,
धरो नैवेद्य ह्वै दक्षक, निकक्षक कर्म चित रक्षक। जजों चौवीस०

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चढाऊँ दीप तम नाशै, उडै कज्जल रु परगासै,
जो आये नाथ के पासै, उरध ततकाल ही जासै। जजों चौवीस०

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

तगर कृष्णागरु लेऊ, वरंगी वह्नि में खेऊँ,
उडै जो धूम्र इम बेऊं, भगे अघ चरण तुव सेऊँ। जजों चौवीस०

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सु दाड़िम नारंगी, अभंगी पुंगी बहुरंगी,
धरे ढिग चरण मनरंगी, लहै पद अचल निरसंगी। जजों चौवीस०

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलादिक द्रव्य सब लीने, अर्घ्य जुत आरती कीने,
हरौ आरत कृपा भीने, कटै जंजाल दुख दीने। जजों चौवीस०

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक - अर्घ

(प्रमिताक्षरा छंद)

वदि माघ चारदश मुक्ति लियं, पद्मासनस्थ दिन चौद कियं,
निरजोग आदि जु अष्टापद तै, तै श्री मुनि अय्युतं संघ मितैं।

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीऋषभदेवजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

(सुन्दरी छंद)

अजित पंचमी सेत सु चैत की, खरग आसन सम्मेद जु थकी,
मास एक निरोधो जोग ही, सहस मुनि संघ मुक्तित्रिया लही।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लपंचम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

(नाराच छंद)

सु चैत सेत छट्ठ को समेदतैं गए सही,
जिनेंद्र संभवेस खर्ग आसने शिवा लही।
सुमास एक जोग को निरोध के प्रबुद्ध ही,
हजार एक और श्री मुनीन्द्र संघ सिद्ध ही॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लषष्ठ्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

(सुन्दरी छंद)

सित सु माधव छट्ठ समेदतैं, खरग-आसन मास निरोधतैं।
अचल श्री अभिनंदन जिन भये, सहस एक मुनीश्वर जुत ठ्ये॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठ्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

मधु एकादशी सुमति समेदतैं, उरध आसन मुक्ति अजोगितैं।
मास एक निरोधे जोग को, सहस संघ जती पछ सेतको॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

असित फागुन चौथ सु पद्मही, उर्द्ध आसन अष्टमि भू लही।
गिरि सम्मेद जु मास निरोध के, शत अट्ठतिस मुन जुत सोध के।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्थ्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री पद्मप्रभजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।६।।

(चौपाई छंद)

फागुन असित सुपास सातैं, गिरि सम्मेद आसन खरगातैं।
रोधे जोग मास इक पाई, मुक्त सहस मुनि जुत ठकुराई।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।७।।

चंद्रप्रभु फागुन सित सातैं, कायोत्सर्गासन गिर वातैं।
रोधे जोग मास इक पाई, मुक्त युक्त मुन सहस इकाई।।

ॐ ह्रीं फागुनशुक्लसप्तम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।८।।

पुष्पदंत आसोज सित आठैं, गिर समेद खर्गासन गाठैं।
मास येक रोधे शिवपाई, वंदौं सहस मुनन जुत राई।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाष्टम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीपुष्पदंतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।९।।

शीतल सित अश्वनि अठ जानौं, खरगासन सम्मेदतैं मानौं।
समवसरण विघट्यो इक मासा, सहस श्रवण जुत शिवपुर वासा।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाष्टम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१०।।

श्री श्रेयांस सेत सावन पूनो, गिर समेद खरगासन मूनो।
रहित जोग तैं एक जु मासा, सहस जती जुत मुक्ति निवासा।।

ॐ ह्रीं श्रावणपूर्णिमास्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।११।।

वासुपूज्य चौदस सित पाई, पद्मासन चंपापुर भाई।
मास एक भादों निरजोगी, सहस मुनी जुत शिव सुख भोगी।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यनाथ जिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२।।

अष्टमि असित अषाढ समेदं, विमल विमल पद मास अजोगं।
खरगासन तैं मुनि जुत जानौं, शत छासठ बारह परमानो।।

ॐ ह्रीं अषाढकृष्णाष्टम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१३।।

चैत अमावस शिखर समेदं, खर्गासन अनंत निरवेदं।
मास एक मुनि जुत शिव भूपं, पचहत्तर सत सात अरूपं।।

ॐ ह्रीं चैत्रअमावस्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीअनंतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१४।।

(मोतीदाम छंद)

सु जेठ सिते चौथी जिन धर्म, समेद गए खरगासन पर्म।
रहे इक मास अयोग मुनीस, लिये सत आठ रु एक जगीस।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१५।।

सु जेठ चतुर्दशि कृष्ण समेद, गये खरगासन शान्ति अवेद।
कियो इक मास सु जोग निरोध, मुनी सत नौ जुतमैं अविरोध।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१६।।

सु माधव एकम कुंथु सुसेत, समेद सहस्र मुनीस समेत।
रहे इक मास अजोग जिनेश, लये खरगासन मुक्ति गणेश।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री कुन्थुनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१७।।

(त्रोटक छंद)

वदि चैत अमावस श्री अरहं, इक मास सु जोग कियो विरहं।
खरगासन तैं मुन जी सहसं, जुतपाय संमेद जुते सुवसं।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाअमावस्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरहनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१८।।

(लोलतरंग छंद)

फागुनकी सित पंचम मल्लं, आसन खर्ग समेद अकल्लं।
मास इके रुध जोग जिनेंदं, पांच सते मित संघ मुनीद्रं।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लपंचम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१९।।

(अडिल्ल छंद)

श्री मुनिसुव्रत फागुन कृष्ण दुवादशी,
गिरि संमेदतैं जाय मिले शिवतिय हसी।
आसन कायोत्सर्ग मास इक थिति ठ्ये,
अनगारी इक सहस संग सास्वत भए।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णद्वादश्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।२०।।

चौदसि श्री नमिनाथ श्याम वैशाख ही,
गिर संमेदतैं मोक्ष सु थान विराज ही।
पद्मासन इक मास निरोधे जोग को,
सहस एक मुनि संघ नमों मल धोइको।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णचतुर्दश्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।२१।।

(वसंततिलका छंद)

अषाढ मास तिथि सात सु सेत जानों,
श्री नेमिनाथ गिरि उर्जयंत मानों।

खरगासनस्थ धरि योग सु एक मासं,
श्री संघ पांच शत छत्तिस जोगिरासं।।

ॐ ह्रीं अषाढशुक्लसप्तम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।२२।।

(भुजंगप्रयात छंद)

सुदि श्रावणी की जुत सातै बखानी, भए पास सम्मेदतैं मुक्तिथानी।
खडा आसनस्थं रहे एक मासं, मुनि संघ सै पांच छत्तीस भासं।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।२३।।

(चाल छंद)

कार्तिक वदी मावस वीरं, पावापुर तैं भवि तीरं।
खरगासन चौदे दीना, रहि छत्तीस मुनि संघ कीना।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाअमावस्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।२४।।

(दोहा)

चौवीसों जिनराज रवि, भविक मोद सुखकार।
मैं पूजों वसु दर्व ले, नित प्रति मंगलकार।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।२५।।

जयमाला

(दोहा)

समवशरणमें विश्वपति, कियौ विश्व व्याख्यान।
मिट्यो जगत मिथ्यात सब, फुनि पहुंचे निरवान।।१।।

(पद्धरी छंद)

जय घाती प्रकृति त्रेसठ सजोगि, दो समय पिच्यासी क्षय अयोगि।
परमौदारिक तै गये मुक्त, जिमि मूस माँहि आकाश शुक्त।।२।।

इक समय माँहि ऊरध स्वभाव, जिमि अग्नि शिखा तनु अंत चाव।
जल मछ इव सहकारीन धर्म, आगे केवल आकाश पर्म।।३।।

साकार निराकारो व भास, सहजानंद मग्न सु चिदविलास।
गुण आठ आदि राजै अनंत, गणधरसे कहत न लहत अंत।।४।।

चेतन परदेशी अस्त व्यस्त, परमेय अगुरुलघु दर्वसस्त।
अरु अमूरतीक सु आठ येव, ये वस्तु स्वभाव सदैव तेव।।५।।

अब गुण पर्ययके भेद दोय, एक व्यंजन दूसरो अर्थ होय।
सो प्रथम अयोगा देहकार, परदेश चिदानंद को निहार।।६।।

अब अर्थ अगुरुलघु गुण सु द्वार, षट् गुणी हानि वृध निज सुसार।
सो समय समय प्रति यही भांत, जिमि जलकिलोल जलमें समात ।।७।।

इह भाँत सु तव गुण पर्ज्य दर्व, हो ध्रौव्योत्पाद-व्ययात्म सर्व।
यह लोक भरो षट दर्वसे जु, तिनकी गुण पर्जय समय के जु।।८।।

सो होत अनंतानंत जान, स्वभाव विभाव सु भेद मान।
जे ते त्रैकाल त्रिलोकके जु, इक समय माँहि जुगपत लखे जु।।९।।

हस्तामल इव दर्पण सु भाव, अक्षय सु उदासीनता सुभाव।
तब इन्द्र ज्ञान तैं मुक्ति जान, आयो पंचम कल्याण थान।।१०।।

चारों विध देव सु सपरिवार, निज वाहन जुवति उछाह धार।
तब अग्निकुमारके इन्द्र ठाढ, निज मुकुर माँहिं तैं अनल काढ।।११।।

कीनों जिन तन संस्कार सार, सौधर्म इन्द्र अति हर्ष धार।
फुनि पूज भस्म मस्तक चढाय, सब देव हु निज निज शीश नाय।।१२।।

करि चिह्न थान निज गए थान, फुनि पूजे मुनि जग खग सु आन।
तुम भए सु आदि अनंत देव, अनुपम अबाध अज अमर सेव।।१३।।

मैं पर्यो चतुर्गति वन सु माँहि, दुख सहे सो तुम से छिपे नाँहि।
तुम करुणानिधि निज बान धार, संसार खारतैं तार तार।।१४।।

(धत्तानंद छंद)

जय जय जगसारं, विगत विकारं, करुणागारं शिवकारं।
मम करु निरवारं, हे प्रणधारं, चिद्व्यापारं दातारं।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

(शिखरणी छंद)

सुनो ज्ञानी प्राणी जगत हित दानी सु जिन है,
जजे हैं जे जीवा त्रिविध विधसों कर्म दल है।
लिए दर्वं सर्वं शुचि अनुपमं अष्टविध जे,
लहै भुक्तिं मुक्तिं परमपद सुक्तिं भव तुमे।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोला छंद)

चौवीसों जिनराज भविक पूजै मन लाई,
तिनके पुत्र कलत्र पौत्र आरोग्य बधाई।
सुजस कांत धन धान्य होय दुख लेस न कोई,
उच्च सुलभ पद सर्व अनुक्रम शिवपद होई।।

इत्याशीर्वादः।

(सवैया)

काशी देश वाणारसि नगरी जन्म क्षेत्र तीर्थंकर च्यार,
श्री सुपार्श्व अरु चंद्रप्रभु श्रेयांस पार्श्व जिन भवि भवतार।
तहँ सज्जन साधर्मी बहु जन भैरोंदास मंद मति धार,
अग्रवाल सुत छोटेलाल जु मीत्तल गोत रचो हित धार।।

(दोहा)

संवत विक्रम दित्य के, उगणी सो सतरा जान।
भादौं शुक्ल त्रयोदशी, पूरण पाठ प्रमान॥

इति संपूर्णम्।

आरती

स्वामीजी! तुम गुण अपरंपार, चंद्रोज्ज्वल अविकार॥टेक॥

जबै प्रभु गर्भ माँहि आए, सकल सुरनर मुनि हर्षाये।
रतन नगरीमैं वर्षाये, अमित अमोघ सुधार॥ स्वामी० १॥

जनम प्रभु तुमने जब लीना, न्हवन मंदिर पर हरि कीना।
भक्ति सुर शची सहित भीना, बोले जय जय कार॥ स्वामी० २॥

अथिर जग जब तुमने जाना, स्तवन लौकांतिक सुर ठाना।
भए प्रभु जती नगन बाना, त्याग राज को भार॥ स्वामी० ३॥

घातिया प्रकृति जबै नासी लोक अरु अलोक परकासी।
करी प्रभु धर्म वृष्टि खासी केवलज्ञान भंडार॥ स्वामी० ४॥

अघातिया प्रकृति जु विघटाइ, मुक्ति-कान्ता तब ही पाई।
निराकुल आनंद असहायी, तीन लोक शिरताज॥ स्वामी० ५॥

चरण मुनिजन तुमरे ध्यावैं, पार गणधर हू नहिं पावैं।
कहाँ लग 'भागचंद' गावै, भव सागर से तार॥ स्वामी० ६॥

अनुभूति तीर्थ महान, स्वर्णपुरी सोहे
यह कहानगुरु वरदान, मंगल मुक्ति मिले.